अहंकार की मृत्यु ही जीवन का सच्चा उत्सव

डॉ. मुकेश नायक

'जिस मरनै थै जग डरै, सो मेरे आनंद. कब मरिहूँ कब देखिहूँ, पूरन परमानंद॥'

संत कबीर का यह दोहा सदियों बाद भी मनुष्य को जीवन और मृत्यु के वास्तविक अर्थ पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है. पहली दृष्टि में यह आश्चर्यजनक लगता है कि जिस मृत्यु से पूरा संसार भयभीत रहता है, उसी को कबीर आनंद का कारण क्यों बताते हैं. किंतु गहराई से देखने पर स्पष्ट होता है कि कबीर यहां शरीर की मृत्यु की नहीं, बल्कि अहंकार की मृत्यु की बात कर रहे हैं.

मनुष्य का अधिकांश जीवन अपने 'मैं' को बचाने और सिद्ध करने में बीत जाता है. वह सम्मान चाहता है, प्रशंसा की अपेक्षा करता है, आलोचना से आहत होता है और निरंतर स्वयं की तुलना दूसरों से करता रहता है. उसकी प्रसन्नता दूसरों की स्वीकृति पर

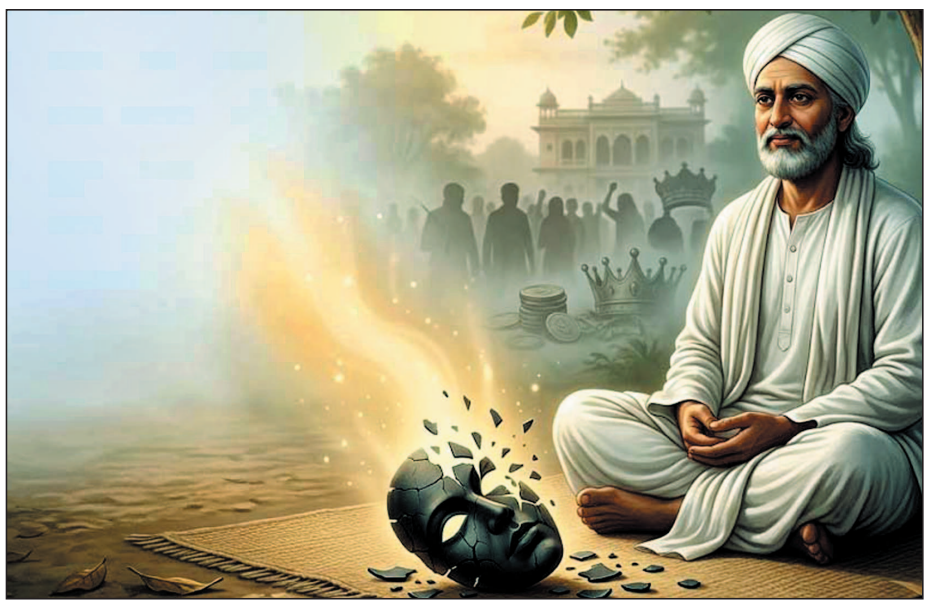

निर्भर हो जाती है, जबकि असफलता या उपेक्षा उसे भीतर तक विचलित कर देती है. यही अहंकार धीरे-धीरे जीवन का सबसे बड़ा बोझ बन जाता है.

कबीर का संदेश है कि वास्तविक स्वतंत्रता तब प्राप्त होती है, जब मनुष्य स्वयं को निरंतर साबित करने की आवश्यकता से मुक्त हो जाए. जब दूसरे की सफलता ईर्ष्या का कारण न बने, जब सम्मान और अपमान दोनों समान प्रतीत हों, और जब आत्मसम्मान दूसरों की राय पर आधारित न रहे, तभी भीतर शांति का उदय होता है.

कबीर यह भी बताते हैं कि स्थायी सुख संग्रह में नहीं, बल्कि त्याग में छिपा है. मनुष्य जीवनभर धन, प्रतिष्ठा, संबंध और उपलब्धियां जुटाने में लगा रहता है, लेकिन इन्हीं के खोने का भय उसे असुरक्षित बनाए रखता है. यदि वह यह स्वीकार कर ले कि संसार की हर वस्तु और हर पहचान अस्थायी है, तो भय और चिंता स्वत: कम होने लगते हैं. तब सफलता अहंकार नहीं बनती और असफलता निराशा का कारण नहीं रहती.

इसका अर्थ यह नहीं कि कबीर संसार छोड़ने या जिम्मेदारियों से भागने की शिक्षा देते हैं. वे गृहस्थ जीवन, रिश्तों और कर्तव्यों का सम्मान करते हुए केवल आसक्ति छोड़ने की बात करते हैं. उनके अनुसार जीवन में सहभागिता आवश्यक है, लेकिन वस्तुओं, पद और अपेक्षाओं का दास बन जाना उचित नहीं. अधिकार भावना के स्थान पर कृतज्ञता का भाव विकसित होना चाहिए.

इसी आंतरिक परिवर्तन को कबीर 'पूरन परमानंद' कहते हैं. यह कोई ऐसा सुख नहीं है जो मृत्यु के बाद प्राप्त हो, बल्कि वह आनंद है जिसे मनुष्य इसी जीवन में अनुभव कर सकता है, जब उसका अहंकार, भय और मोह धीरे-धीरे समाप्त होने लगते हैं.

आज का समाज प्रतिस्पर्धा, तुलना और प्रदर्शन की संस्कृति से घिरा हुआ है. ऐसे समय में कबीर की वाणी पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक प्रतीत होती है. उनका दर्शन मृत्यु का नहीं, बल्कि जागृत जीवन का उत्सव है. वे बताते हैं कि शरीर की मृत्यु तो एक दिन निश्चित है, किंतु उससे पहले यदि अहंकार का अंत हो जाए, तो जीवन अपने वास्तविक सौंदर्य और अर्थ के साथ खिल उठता है.

कबीर का शाश्वत संदेश सरल है, किंतु अत्यंत गहन—यदि हम जीवित रहते हुए भय, अभिमान और मोह को धीरे-धीरे त्यागना सीख लें, तो उसी क्षण उस अनंत आनंद की झलक मिल सकती है, जिसकी तलाश मनुष्य युगों से करता आया है.

क्लास by बड़े भाई

ज्ञान उतरेगा, तभी बात बनेगी..

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, दुनिया में हर किसी के पास आपको बताने के लिए इतना कुछ है कि वह आप पर दिन रात ज्ञान की वर्षा कर सकता है और आपको ऊपर से नीचे तक ज्ञान से तरबतर कर सकता है.. आपको कोई दर्शनशास्त्र का ज्ञाता दिखेगा.. तो कोई दुनियादरी के पैंतरे समझाने वाला दिखेगा.. कोई पारिवारिक रिश्तों पर आपको व्याख्यान देता दिखेगा.. कोई यह सब करता दिखेगा लेकिन छोटे भाई कभी आपने यह सोचा कि ये लोग जो इतनी बड़ी बड़ी बातें हमें उँगलियों में समझाते हैं उनमें बहुत सारे उस जगह पर क्यों नही हैं .. जहाँ उनके ज्ञान को देख सुनकर हमें लगता है कि इन्हें इस ऊँचाई पर होना चाहिए..

इसका कारण है ज्ञान का आत्मसात न होना.. ज्ञान को अमल में न लाना.. यह विषमता इसलिए यह वषमता आपको देखने में मिलती है.. एक उदहारण से समझते हैं.. मान लीजिये आपको बुखार है.. आप बुखार की सारी दवाई जानते हैं लेकिन क्या जानने भर से आकी बुखार ठीक हो जाएगी.. क्या आप बिना दवाई लिए ठीक हो जायेंगे.. नही ऐसा नही होगा.. वो ज्ञान तब प्रभाव करेगा जब आप उसका उपयोग करेंगे..आज ज्ञान हमारे चारों ओर आसमान की तरह है.. एक सर्च में सब है लेकिन वो ज्ञान उसी को असर करेगा जो उसको उपयोग में लायेगा.. किसी को ज्ञान नही देना चाहिए, मेरा यह मतलब नही है.. बल्कि इससे तो लोगों को सीखने को मिलता है लेकिन वो ज्ञान देने वालों और लेने वालों को बदले अपना असर दिखाए इसके लिए तो उसका अभ्यास करना ही पड़ेगा और तभी आप अपने ज्ञान के स्तर वाली जगह पर दिखेंगे..

छोटे भाई, कहने का मतलब है कि ज्ञान उतरेगा, तभी बात बनेगी.. धन्यवाद

लघुकथा

मंजिल

राजश्री राठी

पागल हो गई है सुमी! जान दे रही थी अपनी... अच्छा हुआ मैं समय पर आ गया, वरना...

वरना क्या? जवाब देता मैं मौसी को? मेरे भरोसे ही मौसी ने तुम्हें यहाँ पढ़ने भेजा था.

सॉरी भैया, मुझे समझ नहीं आ रहा मैं क्या करूँ. इस बार फिर से मैं फेल हो गई और वो...

हाँ सुमी, मैं जानता हूँ तुम क्या कहना चाह रही हो. यही न, उस ऋषभ ने तुम्हें धोखा दिया है. सच तो यह है कि ऋषभ के कारण ही

तुम लक्ष्य से भटक गई हो, वरना तुम्हें मैं बचपन से देखता आया हूँ, हमेशा तुम अव्वल रहती थीं.

सुमी, यह प्यार, यह डिग्रियाँ हमारी जान से ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं हैं. अरे, मौसाजी और मौसी के निस्वार्थ प्यार की बराबरी कोई कर सकता है क्या? और तुम तो नृत्य में भी पारंगत हो, तुमने विशारद किया है. चलो, अब आँसू पोंछो और जल्दी से मेरे साथ चलो. तुम्हारी मंजिल तुम्हारा इंतज़ार कर रही है.

मतलब? मैं समझी नहीं भैया.

अरे पगली, मैं तुम्हारी सारी खबर मौसी को देते रहता हूँ. मौसी ने कहा था, तुम्हें यहाँ भेजने से पहले ही वे कशमकश में थे—तुम्हें पढ़ने भेजें या तुम्हारी नृत्य कला को निखारा जाए. हो सकता है, तुम्हारा जन्म इससे बेहतर कुछ करने के लिए हुआ हो.

एक इम्तिहान में हार जाने से जीने के रास्ते नहीं बंद हो जाते. एक हार की नई राहों को जन्म देती है, बस जरूरत है हिम्मत और मेहनत की. यह देखो, तुम्हारे लिए मौसाजी ने नया हॉल बनाया है जिसका नाम है स्वरगंधा नृत्य साधना. वे तुम्हें सरप्राइज देना चाहते थे. सब-कुछ भूलकर चलो अपने नए सफर के रास्ते, तुम्हारी मंजिल तुम्हारा इंतज़ार कर रही है.

विहान की आहट : संवेदनाओं और जीवन-संघर्षों का आख्यान

पुस्तक चर्चा

वंदना गुप्ता

जिंदगी अनेक छोटी-बड़ी कहानियों का कोलाज है. इनमें से कुछ हमारे संवेदनशील मन को छूकर शब्दों का रूप ले लेते हैं. वरिष्ठ कथाकार वंदना बाजपेयी का तीसरा कहानी-संग्रह 'विहान की आहट' ऐसी ही जीवनानुभूतियों से उपजा संग्रह है. नौ कहानियों से सजा यह संकलन अपने पहले ही पृष्ठ से पाठक को बाँध लेता है. इसकी हर कहानी समाज के किसी न किसी ज्वलंत प्रश्न, मानवीय संबंधों और मनोभावों को केंद्र में रखकर आगे बढ़ती है.

शीर्षक कहानी 'विहान की आहट' स्पर्म फ्रीजिंग जैसे संवेदनशील विषय को उठाती है. जयंत के प्रेम तथा बिछोह के बीच खड़ी कृति के सामने प्रश्न है कि क्या वह जयंत के जाने के बाद उसके बच्चे को जन्म देगी. लेकिन जीवन की कुछ समस्याओं का समाधान तत्काल नहीं, समय ही करता है जब व्यक्ति को सोचने, समझने और निर्णय लेने की शक्ति देता है. 'सिम्मोमय'मार्मिक कहानी है. एक गाय और उसके प्रति अम्मा जी के स्नेह को लेखिका ने मनुष्य और पशु के भावनात्मक संबंधों को चित्रित किया है. सिम्मो केवल एक पशु नहीं बल्कि परिवार

का सदस्य बन जाती है. उसके दर्द, बीमारी और अंतत: उसकी मृत्यु का प्रसंग पाठक को भीतर तक झकझोर देता है. 'ज्योति' कैंसर की गंभीर बीमारी पर है, जो रोग और पीड़ा का नहीं, आशा, सकारात्मक सोच और जिजीविषा का संदेश भी देती है. लेखिका यह स्थापित करती हैं कि कैंसर का अर्थ केवल मृत्यु नहीं है.

'गाँव के दिन बहुर गए भैया' ग्रामीण जीवन और बदलते सामाजिक परिवेश की कहानी है. एक लड़की के घर से भाग जाने का दंड पूरे गाँव की लड़कियों को भुगतना पड़ता है. उनकी शिक्षा और स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिया जाता है. 'खुडपैची अम्मा' सास बहू के रिश्ते की आत्मीयता और प्रकृति प्रेम की कहानी है. अम्मा की छोटी-छोटी सीख पानी बचाना, पशु-पक्षियों की देखभाल करना और जीवन के प्रति संवेदनशील रहना कहानी को विशेष अर्थ प्रदान करती हैं. मेघना और अम्मा के बीच का संबंध प्रेम, तकरार और समर्पण का सुंदर उदाहरण बनकर उभरता है. 'धुंधले उजाले' आधुनिक जीवन की अंधी दौड़ और सफलता की कीमत को रेखांकित करती है. सौरभ अपने स्वार्थ और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए दूसरों की भावनाओं को आहत करता है. यह सवाल उठाती है कि हम कितने मानवीय हैं. हैं भी या नहीं. 'टू माई बिल्वड वाइफ' सोशल मीडिया की कृत्रिम दुनिया पर तीखा प्रहार करती है. लाइक और कमेंट के मोह में फँसी राधा अपने वैवाहिक जीवन की तुलना दूसरों से करने लगती है.

इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे समाज के छोटे-छोटे प्रसंगों में छिपी बड़ी सच्चाइयों को सामने लाती हैं. उनकी कहानियों में मानवीय संबंधों के राग-विराग, मन की सूक्ष्म हलचलें, सामाजिक विसंगतियाँ और जीवन के विविध रंग अत्यंत सहजता से अभिव्यक्त हुए हैं. 'विहान की आहट' संवेदनाओं, संघर्षों और आशाओं का जीवंत दस्तावेज़ है, जो पाठक को सोचने और आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है. मानवीय संबंधों के राग विराग की कथाकार वंदना बाजपेयी मनोलोक की सूक्ष्म विवेचना प्रस्तुत करती हैं.

विहान की आहट (कहानी संग्रह)
वंदना बाजपेयी
मूल्य-250 रुपए

कविताएं

गुलमोहर-सा होता है मन...

संगीता दरक माहेश्वरी

रिमझिम से महका है सावन.
खिलता हर मौसम में उपवन.
खूब फूलता-फलता आँगन.
गुलमोहर-सा होता है मन...

शीत छाँव से बड़ा लुभाता.
स्नेह मकरन्द खूब सुहाता.
देखो, सबका हिया चुराता.
गुलमोहर-सा होता है मन...

पुष्पित कलियाँ आती बहार.
स्नेहिल भाव भरे हैं अपार.
सजी खुशियों से त्रिविध बयार.
गुलमोहर-सा होता है मन...

पीत पर्ण ले रहे विदाई.
नवपल्लव ने प्रीत सिखाई.
ओस धूप ने आँख मिलाई.
गुलमोहर-सा होता है मन...

कहानी

खुद्दारी

रेणु गुप्ता

सिस्टर... आपका हाथ बहुत अच्छा है. आपने मेरा खून लेने के लिए जो मुझे सूई लगाई, जरा भी दर्द नहीं हुआ.

थैंकयू सो मच अंकल. वृद्धउद्योगपति विभूति जी का ब्लड सैम्पल लेने वाली युवा नर्स ने स्मित के साथ उनसे कहा.

उस पूरे दिन विभूति जी के जेहन में उसकी सौम्य, सलोनी छवि तारी रही.

शाम को विभूति जी घर से कुछ दूर चहलकदमी कर रहे थे, कि तभी वहाँ उसी नर्स को किसी वृद्ध के साथ देख ठिठक कर उससे बोले, अरे सिस्टर,

आप? आप यहाँ कैसे?

अंकल, मैं वो सामने गली में रहती हूँ. ये मेरे पापा हैं. इन्हें बस जरा हवाखोरी के लिए बाहर ले आई.

बेटा, यहाँ सड़क पर तो गाड़ियों की रेलम-पेल है, बहुत धुआँ धक्का? है. तुम्हें इन्हें वो सामने वाले पार्क में ले जाना चाहिए.

जी अंकल, चलिए, आप कह रहे हैं, तो अभी पार्क चलते हैं.

चलो बेटा. और हाँ बेटा जी, आपका नाम क्या है?

अंकल, मेरा नाम बरखा है.

बरखा, उसके पिता नरेनजी और विभूति जी, तीनों पार्क में कुछ देर गपिया कर घर लौट गए.

विभूति जी को बरखा बेहद अच्छी लगती, मानो वो उनकी अजन्मी बेटी हो. उस दिन के बाद से वे करीब-करीब रोजाना पार्क में मिलते. उस दिन बरखा और उसके पिता पार्क गए, लेकिन विभूति जी नहीं आए. अगले पूरे पखवाड़े विभूति जी पार्क नहीं आए. पता चला, विभूति जी को हार्ट अटैक आया था.

अगले ही दिन दोनों बाप-बेटी उनके घर पहुँच गए.

घर क्या था,शानदार साज सज्जा और फर्नीचर से युक्त विशाल आलीशान महलनुमा कोठी थी. गृह सेवक महँगे चमाचम कांच के बर्तनों में चाय और नाश्ता ले आया.

विभूति जी ने दोनों को बहुत आग्रह कर चाय-नाश्ता करवाकर उन्हें विदा किया.

बेटा, विभूति जी ने अपने व्यवहार से कभी ये नहीं जताया कि वे इतने रईस हैं. हम दोनों के साथ कितने अपनेपन से पेश आते हैं.

हाँ, पापा, उन्हें जरा भी अपनी दौलत या रुतबे का घमंड नहीं.

हाँ बेटा. संस्कारी खानदानी लोग ऐसे ही होते हैं.

वक्त यूँ ही दबे पांव गुजरता जा रहा था.

हार्ट अटैक के बाद विभूति जी ने बरखा को अपनी अटेंडेंट के तौर पर रख लिया.

बरखा एक मृदु स्वभाव की अत्यंत सेवा भावी युवती थी जिसके लिए मरीज की देखरेख एक नैतिक जिम्मेदारी थी.

विभूति जी निसंतान विधुर थे. अंतर्मुखी, साथ ही मित भाषी होने की वजह से उनके मित्र ना के बराबर थे. सो वे अकेले रहते-रहते डिप्रेशन और एन्जाइटी के चंगुल में फंसते जा रहे थे. उन्हें अनवरत यह चिंता सताती कि कहीं उन्हें फिर से दोबारा दिल का दौरा न पड़ जाए और इसकी वजह से वे हमेशा बेचैन रहते.

उस दिन दोपहर के भोजन के बाद विभूति जी हलकी तंद्रा में थे. तभी विभूति जी बेहद डरे हुए से चिल्लाए, बरखा बेटा... मुझे फिर से हार्ट अटैक आ रहा है. मेरा दिल बहुत तेजी से धड़क रहा है और मुझे पसीने आ रहे हैं.

बरखा ने विभूति जी का परीक्षण कर उन से कहा, अंकल जी, क्या आपके सीने में दर्द हो रहा है? या फिर आपकी सांस फूल रही है? सही-सही बताइये, क्या आपको सांस लेने में मुश्किल हो रही है?

नहीं, बस दिल की धड़कन तेज हो गयी है.

अंकल, मुझ पर भरोसा करिए, ये हार्ट अटैक नहीं है, हार्ट अटैक में दिल में दर्द होता है, ना कि धड़कन बढ़ती है. ये जो कुछ हो रहा है, ये आपकी सायकॉलॉजीकल प्रॉब्लम है. आपकी एन्गाजाइटी है.

विभूति जी ने एक बच्चे की तरह उमगते हुए बरखा से पूछा, तू सच कह रही है बिटिया? ये हार्ट अटैक के सिम्टम्स नहीं है?

सौ प्रतिशत सच अंकल जी. अब मैं हूँ न आपके पास. आपकी बेटी, आपकी सबसे अच्छी फ्रेंड.

जुग जुग जियो बिटिया. सच में तू मेरी बेस्ट फ्रेंड है... . विभूति जी ने बहुत लाड़ से बरखा से कहा.

कुछ ही दिनों में बरखा ने अपनी समर्पित सेवा से निस्संतान विभूति जी के दिल में अपनी जगह बना ली थी और वे उससे पितृवत स्नेह करने लगे थे. दोनों घंटों इधर उधर की बातें करते. कभी कभार बरखा अपने साथ अपने पिता को उनसे मिलाने के लिए ले आती.

एक दिन बरखा के पिता ने विभूति जी से कहा, साहब... ये बरखा आपको बहुत मानती है. तो इसे शादी के लिए मनाइये ना. मैं तो जब भी इससे शादी की बात करता हूँ, ये उसे हवा में उड़ा देती है. इस पर बरखा बोल पड़ी, अंकल, मैं नर्सिंग में पोस्ट ग्रेजुएशन करने के बाद ही शादी करूंगी. जैसे ही मैं पोस्ट ग्रेजुएशन के कोर्स की फीस के रूपए जमा कर लूंगी, मैं नौकरी छोड़ वो जॉइन कर लूंगी. रही शादी, तो वो तो मेरी प्लानिंग में दूर-दूर तक नहीं है.

ओह... तो हमारी बिटिया को अभी आगे पड़ना है? कोई बात नहीं,हम आपके पोस्ट ग्रेजुएशन का सारा खर्चा उठाएंगे. और हाँ भाई, आपको बिटिया की शादी की चिंता करने की भी जरूरत नहीं. मैं अपनी बेटी की शादी बहुत धूमधाम से करूँगा.

आपकी बिटिया ने अपनी सेवा से मेरा दिल जीत लिया है. तो उसे मेवा भी तो मिलनी चाहिए ना.

आपका लाड़ दुलार सर माथे अंकल, लेकिन मेरी मेहनत की आप मुझे सैलरी देते ही हैं. मैं आपसे उसके अलावा कुछ और नहीं ले सकती. बरखा ने हाथ जोड़ विभूति जी से कहा.

विभूति जी बरखा का आत्मविश्वास और खुद्दारी के भाव से दप-दप करता चेहरा देखते रह गए.

अक्षरों के साथ-साथ...

नारायण श्रीवास्तव

बादलों के टुकड़ों में
अनुमानकर अक्षर
बच्चे आँगन में उछलते हैं
और उछलते रहते हैं
दहलान पर
बुजुर्गों द्वारा ग्रंथों की
भाषा से आकृतियाँ
अलग-अलग कर
लगभग समझ जाने से
भोजन के समय
बहन द्वारा
रोटी पानी टमाटर
नमक मिर्च दूध दही
घी के उच्चारण से
खेलते खाते
आकृतियाँ पकड़
बताने से.

गाँव से बाहर बगीचे में
हमजोलियों के साथ
आपस में
झूमते झटकते
पेड़ों से ऋतु अनुकूल
फल पाने की
निश्छल खुशी में
आ जाते हैं
कुछ आकार

वरिष्ठ साथियों के
संकेतों से.

और यही स्वरूप
बढ़ते जाते हैं
पाठशाला जाते
प्रार्थना करते
घंटा मिनट सेकंड
बैठते जब
पढ़ने के लिये
उतारते कलम से स्लेट पर
पेन से कागज़ पर
एक दूसरे के
प्रयास देखकर.
पंक्तिबद्ध बैठकर
कभी-कभी चुपके
पीछे से कमीज पर.

यही आनंद खेलता है
बच्चों में
फूल में
तितलियों में
धूल से नहातीं चिड़ियों में
और उभरता जाता है ब्रह्म
-
अक्षरों में
संपृक्त हो जाता है जो
मन, बुद्धि, चित्त में.

और फिर कभी वह
अंजुलि में उठा लेता है
धरती
पुन: रख देता है
जहाँ के तहाँ
इसप्रकार -
जानता रहता है
समग्र रहस्यों के रहस्य
अक्षरों के साथ-साथ.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी